इकाई 32 परा-राष्ट्रीय आन्दोलनः सांस्कृतिक और सभ्यतामूलक

संरचना

32.1 प्रस्तावना

32.2 परा-राष्ट्रीय स्थानान्तरणों का अभिप्राय

32.3 राज्येत्तर अभिकर्त्ता और अन्तर्राष्ट्रीय संस्कृति

32.3.1 सूचना और अन्तर्राष्ट्रीय संस्कृति

32.4 धार्मिक आन्दोलन

32.4.1 दावत-इ-इस्लामी

32.4.2 विभिन्न प्रकार के अन्तर्राष्ट्रीय कार्यकलाप

32.5 परा-राष्ट्रीय समुदाय और सभ्यता मूलक आन्दोलन

32.5.1 प्रवासी (Diasporas)

32.6 संस्कृति और परा-राष्ट्रीय आन्दोलन

32.6.1 अन्तर्राष्ट्रीय पत्रकारिता

32.6.2 अन्तर्राष्ट्रीय खेलकूद समारोह

32.6.3 प्रसारण - टी.वी. और रेडियो की भूमिका

32.6.4 पर्यटन

32.7 सारांश

32.8 अभ्यास प्रश्न

32.1 प्रस्तावना

आपने पढ़ा है कि राजनीतिक क्रिया में/का राष्ट्र-राज्य सबसे अधिक महत्वपूर्ण अभिकर्त्ता रहा है और अभी भी है। पिछली इकाइयों में जब शक्ति, राष्ट्रीय हित, विदेश नीति, शस्त्र नियंत्रण, शक्ति संतुलन और अन्तर्राष्ट्रीय संगठन जैसी अवधारणाओं पर चर्चा की गई थी तो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से बल राष्ट्र-राज्य पर था। फिर भी, बीसवीं शताब्दी के लगभग तीन दशकों में राष्ट्र-राज्य की प्रमुखता को चुनौती दी गई थी। कई नए राज्येत्तर अभिकर्त्ताओं के क्रियाकलाप बढ़ रहे हैं जिसने बदले में, परा-राष्ट्रीय आन्दोलनों को योगदान किया है। आज व्यक्ति से व्यक्ति का संबंध उतना ही महत्वपूर्ण हो गया है जितना सरकार से सरकार का होता है।

इस इकाई में उन परा-राष्ट्रीय आन्दोलनों के महत्व पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है जिनमें ऐसे विभिन्न क्षेत्रों में, जैसे खेलकूद और पर्यटन या धार्मिक और संजातीय समूहों या तथा कथित मैकवर्ल्ड बनाने वाले फास्टफूड शैली का सांस्कृतिक आक्रमण अंतर्निहित हैं। संजातीय समूह और धार्मिक कट्टरवाद राष्ट्र-राज्य की परम्परागत भूमिका के लिए चुनौती उत्पन्न करते हैं।

बहुत बड़ी संख्या में लोगों के आप्रवासन ने ऐसी परिस्थिति उत्पन्न की है, जिसे "प्रवासी" (*Diaspora*) कहा जाता है। भारतीय समुदाय, चाहे संयुक्त राज्य अमेरिका में हों या यूनाइटेड किंगडम में हों या कहीं अन्यत्र हों, अपनी सांस्कृतिक मान्यताएँ और सभ्यता की परम्पराएँ ले जाते हैं, जबकि अपने अंगीकरण के नए देशों में अपने आपको समाकलन करने का प्रयास करते हैं। कई देशों से ये

आप्रवासी समुदाय कुछ समय तक निर्मूलता की समस्या का सामना कर सकते हैं, परन्तु शीघ्र ही वे अपने आतिथेय देशों में अपने मूल्यों का प्रसार करना आरंभ करते हैं और यहाँ तक कि इन देशों के राजनीतिक जीवन में योगदान भी करते हैं। ये पराराष्ट्रीय स्थानान्तरण या परा-राष्ट्रीय राजनीति के सकारात्मक और नकारात्मक दोनों पहलू होते हैं।

32.2 परा-राष्ट्रीय स्थानांतरणों का अभिप्राय

आपने देखा है कि बहुत लम्बे समय से अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में राष्ट्र-राज्य केवल अभिकर्त्ता थे। वे अभी भी राजनीति के मुख्य अभिकर्त्ता हैं, राष्ट्र-राज्यों के बीच सम्बंधों के कारण अन्तर्राष्ट्रीय कहा जाता है। परन्तु कई राज्येत्तर अभिकर्त्ताओं की बढ़ती हुई भूमिका से और भूमंडलीयकरण के फलस्वरूप राज्यों की सीमाएँ अस्पष्ट हो गई हैं। आज कई (राष्ट्र-राज्य के अलावा) अन्तर्राज्य संगठनों (Inter-Governmental Organisations – IGOs) और गैर सरकारी संगठनों (Non-Government Organisations) की विशाल संख्या है जो राष्ट्रों के बीच नीतियों के स्वरूप का निर्धारण करते हैं। इसके अलावा, जैसा कि ऊपर कहा गया है, प्रत्येक व्यक्ति से सम्पर्क उतना ही महत्वपूर्ण हो गया है जितना प्रत्येक सरकार के बीच होता है। गैर सरकारी और अंतः सरकारी कार्यकलापों के भिन्न भिन्न प्रकारों पर प्रकाशित साहित्य के सम्पूर्ण क्षेत्र को परा-राष्ट्रीय राजनीति नाम दिया गया है। इस प्रकार के राज्येत्तर का आधार कई - सांस्कृतिक और सभ्यता विषयक आन्दोलनों में पाया जाता है इसमें प्रत्येक व्यक्ति का सहयोग पाया जाता है। इनका वर्णन परा-राष्ट्रीय आन्दोलनों के रूप में किया जा सकता है।

जॉन कावानाघ 1990 के दशक के दौरान भूमंडलीयकरण के बारे में लिखे गए साहित्य के रूप में विशेष प्रकार के आन्दोलन से करता है जिसे वह "असाधारण" वर्णन करता है। उसने लिखा "आन्दोलनों में से एक जिसे सबसे अधिक रोचक पाया और कुछ तरीकों में सबसे अधिक सदृश्य है, जिसे विश्व भर में बनाया गया है - यह असाधारण परा-राष्ट्रीय आन्दोलन था, जिसकी जड़े यहाँ संयुक्त राज्य अमेरिका और इंग्लैण्ड तथा विश्व के भिन्न भिन्न भागों तथा अफ्रीका में थी, लगभग 1780 के दशक और 1800 के दशक के प्रारंभ के बीच अंटलांटिक गुलाम व्यापार के विरुद्ध संघर्ष किया था। इस प्रकार गुलामों के व्यापार का प्रतिरोध तथा इसके विरुद्ध संघर्ष परा-राष्ट्रीय आन्दोलन का उदाहरण हो सकता है क्योंकि यह विश्व भर में कई देशों में फैल गया था।

परा-राष्ट्रीय की अवधारणा का सविस्तार विवेचन राबर्ट ओ किओहेन और जोजफ एस नीए जूनियर द्वारा 1972 में *Transnational Relations and World Politics* में किया गया। पुस्तक में राज्येत्तर अभिकर्त्ताओं, जैसे धार्मिक और संजातीय समूह तथा बहुराष्ट्रीय निगमों तथा आतंकवादी समूहों की भूमिका पर बल दिया गया है। उन्होंने तर्क दिया कि सभी अन्तर्राष्ट्रीय कार्यकलापों के 50 प्रतिशत से भी अधिक में राज्येत्तर अभिकर्त्ताओं की अंतःक्रियाएँ शामिल हैं। लेखकों का तर्कसंगत निष्कर्ष था "परम्परागत मॉडल के आधार पर अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों का विश्लेषण, जिसमें राज्येत्तर अभिकर्त्ताओं को शामिल नहीं किया जाता है, वास्तविकता को गंभीर रूप में विकृत करता है क्योंकि यह महत्वपूर्ण परा-राष्ट्रीय कार्यकलापों की अवहेलना निरंतर पर्याप्त और बहुत मात्रा में करता है।" इस निष्कर्ष में, यह जोड़ा जाना चाहिए कि प्रत्येक व्यक्ति से हुए सम्पर्कों ने आगे परा-राष्ट्रीय कार्यकलाप और स्थानान्तरणों को सुदृढ़ किया है।

अतः परा-राष्ट्रीय आन्दोलन ऐसी राजनीति पर आधारित हैं जिसमें परम्परागत राष्ट्र-राज्य और सभी उपराज्यों, या राज्येत्तर अभिकर्त्ताओं के बीच अन्योन्यक्रिया शामिल होती है। जॉन बर्टन राजनीतिक

दलों, संजातीय समूहों, बहुराष्ट्रीय निगमों और सांस्कृतिक संगठनों, जैसे अभिकर्त्ताओं के कार्यकलापों का उल्लेख करता है जो कभी कभी अपनी सरकारों के नियंत्रण से बच निकलते हैं। उनकी अपेक्षा नहीं की जा सकती है। बर्टन और उसके सहयोगियों का तर्क है, प्रौद्योगिकी, विशेषकर संचार, परिवहन और आयुध के क्षेत्र में विपुल वृद्धि ने ऐसी स्थिति उत्पन्न कर दी है कि वे इसे "अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों का तंतुजाल मॉडल" के रूप में उल्लेख करना पसंद करते हैं। ऐसा मॉडल न केवल राष्ट्र-राज्यों और विशाल बहुराष्ट्रीय निगमों को शामिल करेगा अपितु संजातीय समूहों और आन्दोलनों को भी शामिल करेगा जैसे अल्स्टेर (उत्तरी आयरलैण्ड) की आइरिस रिपब्लिकन आर्मी, साइप्रस में टर्की - साइप्रस समुदाय, नाइजीरिया में बियाफ्रांस, ईरान, ईराक और टर्की में कुर्द और स्पेन में बास्क। तंतुजाल मॉडल उन व्यक्तियों और गैर सरकारी संगठनों को शामिल करेगा जिनका शक्तिशाली परा-राष्ट्रीय प्रभाव है।

परा-राष्ट्रीय आन्दोलन न केवल सांस्कृतिक और सभ्यतामूलक समूहों तक ही सीमित रहता है, बल्कि कई अन्य राज्येत्तर अभिकर्त्ता भी शामिल करता हैं, जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है। केग्ले जूनियर और विट्ट कॉफ ने राय व्यक्त की कि "यह धारणा कि राज्य का अपनी नियति प्रर पूरा और विशेष नियंत्रण है, निरंतर संदेहास्पद होते जा रहा है। सीमाएँ बेरोकटोक हो गई हैं और राज्य के लिए बाहरी दबाव और अपनी सीमाओं के अंदर रहने वाले लोगों दोनों से चुनौती अति संवदेनशील हैं।"

मैथ्यू एवांग्लिस्ट्रा ने अपनी पुस्तक *Unarmed Forces* में तर्क दिया है कि परा-राष्ट्रीय आन्दोलनों ने शीत युद्ध समाप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, "... पिछली अर्ध शताब्दी के परा-राष्ट्रीय आन्दोलन कठोर सर्वसत्तात्मक सोवियत संघ की नीतियों और निणयों को प्रभावित करने और संयुक्त राज्य अमेरिका की विदेश नीति स्थापना को अधिकारतंत्री बनाने में सक्षम हुए थे।"

अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद की और गैर सरकारी संगठनों की भूमिका की व्याख्या और विश्लेषण पिछली इकाइयों में की गई है। आपके पाठयक्रम की इस अंतिम इकाई में हम धार्मिक आन्दोलनों, संजातीय-राष्ट्रीय आन्दोलनों, परा-राष्ट्रीय संस्कृति और सभ्यतामूलक आन्दोलनों को प्रतिबिम्बित करने वाले प्रवासियों द्वारा किए गए परा-राष्ट्रीय राजनीति के योगदान का विश्लेषण करेंगे।

32.3 राज्येत्तर अभिकर्त्ता और अन्तर्राष्ट्रीय संस्कृति

ऊपर यह कहा गया है कि राज्येत्तर अभिकर्त्ता परा-राष्ट्रीय आन्दोलनों में महत्वपूर्ण सक्रियतावादी बन गए है। ये अभिकर्त्ता असंख्य हैं, लगातार सक्रिय और स्वाग्रही बन रहे हैं। बहुराष्ट्रीय निगमों और आतंकवादी समूहों के अलावा, इन अभिकर्त्ताओं में स्वतंत्रता की माँग करने वाले राज्य के अंदर संजातीय अल्पसंख्यक (जैसे श्रीलंका में तमिल और स्पेन में बास्क) दो या अधिक देशों (उदाहरण के लिए कुर्द जो ईरान, ईराक और टर्की हैं।) में अन्तर्राष्ट्रीय रूप से सक्रिय समूह भी शामिल हैं, जो राज्य के प्राधिकार को चुनौती देते हैं और परा-राष्ट्रीय आन्दोलनों को बढ़ावा देते हैं। उनमें धार्मिक संस्थाएँ, जैसे रुढ़िवादी क्रिश्चियन चर्च और अधिक आक्रामक तथा लड़ाकू समूह, जैसे कई इस्लामी संगठन, जैसे अलकायदा भी शामिल हैं। यह देखा गया है कि इन समूहों में विविधता आश्चर्यजनक है, यद्यपि वे किसी खास देश के सीमित हितों के बदले मुख्यतः अपने स्वयं के सीमित हितों के लिए समर्पित होते हैं। रिड्डेल डिक्सन को (1995) में राज्येत्तर अभिकर्त्ताओं के विषय में यह कहना पड़ा था। शब्द "राज्येत्तर सत्व" के अंतर्गत समूहों की विशाल श्रेणी आती है। सबसे अधिक बुनियादी स्तर पर राज्येत्तर सत्व उन व्यक्तियों और/या समूहों का संघ है जिन्हें राज्यों के बीच करारों द्वारा स्थापित नहीं किया

गया है। इस सामान्य परिभाषा में ऐसे विषम सत्व शामिल हैं जिन पर संक्रमणकालीन निगमों और व्यापारी संघों की स्थापना अपने हितों, व्यावसायिक संघों, संजातीय समूहों, प्रमुख धार्मिक संगठनों, आंतकवादी समूहों और सामाजिक आन्दोलनों को बढ़ावा देने के लिए स्थापित करते हैं। राष्ट्र-राज्यों की सीमाओं को अस्पष्ट करने में राज्येत्तर अभिकर्त्ताओं की भूमिका महत्वपूर्ण है। ये अभिकर्त्ता आन्दोलन करते हैं जो कई देशों में सक्रिय होते हैं, बहुधा संविधानेत्तर और हिन्सक उपायों का भी प्रयोग करते हैं।

32.3.1 सूचना और अन्तर्राष्ट्रीय संस्कृति

विश्व व्यापी दूरसंचार अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों में सूचना और संस्कृति कार्य के तरीके में पर्याप्त परिवर्तन कर रहे हैं। सूचना राष्ट्रीय सरकारों के लिए आपस में एक दूसरे के साथ अपनी पारस्परिक क्रिया का महत्वपूर्ण साधन है। इस पर भी प्रौद्योगिकी साथ ही इन सरकारों को क्षतिं पहुँचा रही है तथा दुर्बल बना रही है और सत्ता को राज्येत्तर अभिकर्त्ताओं तथा व्यक्तियों के पास स्थानांतरित कर रही हैं। इन नए शक्ति प्राप्त व्यक्तियों और समूहों ने राज्यों की परवाह न कर विश्व व्यापी नेटवर्क बनाना आरंभ कर दिया है।

सूचना प्रौद्योगिकी की शक्ति ने विश्व भर में लोगों के जीवन में क्रान्ति उत्पन्न कर दी है। आज घर में बैठे आप अपने टेलिफोन पर कोई भी नम्बर डायल कर सकते हैं, विश्व के किसी भी भाग में अपने मित्र, संबंधी या व्यापार सम्पर्कों से बात कर सकते हैं। "ठीक सौ वर्ष पहले तत्काल विश्व सम्पर्क का विचार ही समझ से बाहर की बात थी।" गोल्डस्टीन ने आगे कहा, "यह कल्पनातीत प्रतीत होगा कि कोई हाथ से पकड़े यंत्र (कार्डलेस फोन) पर दर्जन बटंनों को दबा सकते हैं और विश्व के (और बहुत से गरीब क्षेत्रों के) आर्थिक रूप से विकसित क्षेत्रों में कहीं भी करोड़ो लोगों से बात कर सकता है।" केवल यही उतना आकर्षक नहीं है, बल्कि अब टेलीविजन की भूमिका बहुत आम है जिसने संगीत, नृत्य और सोप ओपेरा के क्षेत्र में नए परा-राष्ट्रीय संस्कृति का सृजन किया है। गोल्डस्टीन पुनः कहता है कि "यह समान रूप से हास्यास्पद विचार था कि आप बॉक्स को जो सूटकेस से बड़ा नहीं होता है, देखते हैं और उस पर सुदूर स्थानों पर उसी समय हुई घटनाओं का सजीव चित्र देख सकते हैं। आज यह वास्तविकता है, केवल 150 वर्ष पहले सूचना के कोई भी आधुनिक माध्यम उपलब्ध नहीं थे। लोग केवल पत्र लिखते थे और उसे बहुधा घोड़े द्वारा या जहाज द्वारा भेजते थे।

सूचना जिस माध्यम - टेलीफोन, टेलीविजन, ई-मेल आदि - से यात्रा करती है, विचार उन तरीकों का आकार ग्रहण करते हैं और एक स्थान से दूसरे में फैलते हैं। रेडियो और टेलीविजन यहाँ तक कि तृतीय विश्व देशों में सबसे अधिक गरीब क्षेत्रों में भी अधिक से अधिक पहुँचता है। और अब मोबाइल फोन के अलावा, बेवसाइट और ई-मेल ने विश्व के सभी भागों में अविश्वसनीय संयोजन प्रदान है। इसके फलस्वरूप असंख्य परा-राष्ट्रीय आन्दोलन हुए हैं। टेलीविजन विशेष रूप से शक्तिशाली है। चित्रों और ध्वनियों का संयोजन दर्शकों को भावात्मक रूप से और बौद्धिक रूप से प्रभावित करता है। दर्शक दूर की घटनाओं को अपहृत विमानों से वाशिंगटन डी.सी. में पैण्टागन बिल्डिंग पर और न्यूयार्क में वर्ल्ड ट्रेड टावर सेन्टर पर आतंकवादियों द्वारा आक्रमण किया गया था, टेलीविजन पर विश्व भर के संयुक्त राज्य अमेरिका की इस घटना का सजीव कवरेज देखकर प्रत्येक दर्शक ने यह अनुभव किया कि वह भी इस घटना के दर्शकों का एक भाग है। इसी प्रकार गुजरात के भागों में भूकम्प द्वारा किए गए विनाश ने मानव जाति को हिला दिया और अल्पतम समय में राहत के लिए सहायता उपलब्ध की गई। जब कि टेलीविजन से लोग इस विभीषिका को देख सकें, जेट विमान अल्पतम संभव समय में पीड़ितों को सहायता पहुँचा सकें।

यह केवल वे व्यक्ति नहीं है जो सूचना की शक्ति से लाभान्वित हुए हैं, अपितु सरकारें भी हुई हैं जो सूचना को शक्ति का साधन के रूप में प्रयोग करते हैं। सरकारें अपने राज्यों की सीमाओं के अंदर और बाहर दोनों की सूचना एकत्र करने के लिए विशाल राशि में धन व्यय करते हैं। राज्यों, राज्येत्तर अभिकर्त्ताओं और व्यक्तियों द्वारा एकत्र की गई सूचना से आपस में निकटतम अन्योन्यक्रिया की जा सकती है। परा-राष्ट्रीय राजनीति बनाने के लिए प्रयोग कर सकते हैं। शीत युद्ध अवधि के दौरान सरकारें बहुधा विरोधी पक्ष की सूचना रोकते थे। परन्तु आज मीडिया इतना शक्तिशाली है कि यह विश्व राजनीति में प्रमुख खिलाड़ी बन गया है। मीडिया/सूचना संस्कृति महत्वपूर्ण परा-राष्ट्रीय आन्दोलन हैं। कम्प्यूटरों, अन्तर्राष्ट्रीय टेलीफोन लाइनों, वेबसाइट और ई-मेल प्रौद्योगिकी के बिना आधुनिक अर्थव्यवस्था चलाने का प्रयास केवल आर्थिक गतिहीनता को योगदान करेगी जितने अधिकाधिक संचार चैनल अधिक स्थानों को अधिक सूचना ले जाती है, उतना ही अधिक स्थानों को अधिक सूचना ले जाती है, उतना ही अधिक सरकारें भीड़-भाड़युक्त क्षेत्र में एक अन्य खिलाड़ी बन जाती हैं। सूचना क्रान्ति ने अन्तर्राष्ट्रीय अन्योन्याश्रय में पर्याप्त वृद्धि की है, "एक राज्य में कार्रवाई करने की प्रतिक्रिया अन्य राज्यों में पिछले समय की अपेक्षा अब अधिक दृढ़ता से होती है।" साथ ही, राज्येत्तर परा-राष्ट्रीय अभिकर्त्ताओं को शक्ति देने से सूचना प्रौद्योगिकी विश्व राजनीति में स्वयं राज्यों की केन्द्रीयता को दुर्बल कर रहा है।

जोशुआ एस. गोल्डस्टीन का तर्क है कि परा-राष्ट्रीय अभिकर्त्ताओं की शक्ति की वृद्धि ने दो परस्पर विरोधी शक्तियों की क्रियाशील बनाया है। एक ने उपराज्य अभिकर्त्ताओं जैसे संजातीय समूह को शक्ति प्रदान है, जिसके परिणामतः सोवियत संघ और यूगोस्लाविया का विघटन तथा शीत युद्ध की समाप्ति के बाद से आंतरिक कलह का प्रसार हुआ है। जैसे ही उपराज्य अभिकर्त्ता शक्ति प्राप्त करते हैं, वे स्वायतत्ता और प्रभुसत्ता के अपने स्वयं के राष्ट्रीय अधिकारों की माँग करते हैं। परन्तु दूसरी शक्ति परा-राष्ट्रीय समुदायों और अधिराष्ट्रीय पहचानों के लिए धीरे-धीरे आगे बढ़ रहे हैं। यहाँ क्षेत्रीयवाद (यूरोपीय संघ या एशियान) या भूमंडलीयवाद भिन्न भिन्न राज्यों में लोगों के बीच संचार संबंधें पर अन्तर्राष्ट्रीय संस्कृति के रूप में स्वतः प्रभाव डालती है। इस (धीरे-धीरे अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय को आगे बढ़ाने वाली) दूसरी शक्ति राष्ट्रीय सीमाओं के महत्व की चुनौती देती है और परा-राष्ट्रीय संस्कृति का निर्माण करती है।

32.4 धार्मिक आन्दोलन

सामान्यतया धर्म व्यक्ति या व्यक्तियों के समूहों के विश्वास पर आधारित होता है। आस्तिकों (विश्वास करने वालों) से यह आशा है कि (क) वे अपने धर्म का पालन करने के लिए किसी अन्य को बाध्य नहीं करेंगे परन्तु प्रत्येक व्यक्ति को धर्म के मामले में स्वतंत्रता बरतने की अनुमति देंगे, और (ख) धर्म को राजनीति से नहीं मिलाया जाएगा और कि राज्य तथा धर्म को एक-दूसरे से स्वतंत्र रखा जाएगा। सिद्धान्त में धर्म, शान्ति और सौहार्द के लिए स्वाभाविक विश्वव्यापी शक्ति प्रतीत होना चाहिए। परन्तु धर्म के नाम पर लाखों लोग मारे गए हैं। ग्यारहवीं और चौदहवीं शताब्दियों के बीच धर्मयुद्धों ने लाखों ईसाइयों और मुसलमानों को मौत के घाट उतारा और ईसाई कैथोलिकों और प्रोटेस्टेण्टों के बीच तीस वर्षों के युद्ध (1618-1648) के दौरान धार्मिक संघर्षों में कुल यूरोपवासियों के लगाग एक चौथाई मारे गए। द्विराष्ट्र सिद्धान्त के आधार पर 1947 में ब्रिटिश भारत के विभाजन ने साम्प्रदायिक उन्माद कहर ढाया और लाखों लोग - हिन्दू और सिख पाकिस्तान में मारे गए, घायल हुए अपंग बनाए गए या बलात्कार किया गया। इसकी प्रतिक्रिया में भारत में भी साम्प्रदायिक दंगे हुए, बहुत मुसलमान मारे गए

और घायल किए गए। पाकिस्तान में हिन्दुओं और सिखों के सामूहिक आप्रवासन ने अप्रत्याशित संकट पैदा करा दिया। पश्चिम एशिया में अरब मुसलमानों और इजराइल यहूदियों के बीच चल रहें संघर्ष, निर्दोष लोगों की हत्या के लिए जिम्मेदार हैं, भूतपूर्व यूगोस्लाविया बोसनिया के मुसलमान भी पड़ोसी सर्वों द्वारा "संजातीय स्वच्छता" के नाम पर प्रभावित हुए, और जम्मू और कश्मीर में आतंकवादी हिन्सा ने लाखों पंडितों को अपना घर छोड़ने के लिए बाध्य किया और भारत के अंदर ही शरणार्थी बन गए हैं, जबकि हिन्दू और मुसलमान दोनों सीमा पार से प्रायोजित जिहाद के नाम में मारे जा रहे हैं।

विश्व के भारी संख्या में लगभग 6 बिलियन लोगों में कट्टर धार्मिक विश्वास है। निरपेक्ष स्तर पर धर्म लोगों के समूह द्वारा सहभाजित धारणा की पद्धति है जो अपने सदस्यों को उपासना का लक्ष्य और व्यवहार की संहिता प्रदान करता है। प्रत्येक धर्म शान्ति और भाई चारे का श्रेष्ठ आदर्शों का उपदेश देता है परन्तु व्यवहार में विश्वास (धर्म) बहुत बार घृणा और हिन्सा के आंदोलनों को भी पैदा करता है। विश्वास की पद्धति धर्म के अनुयायियों को उनकी पहचान का मुख्य स्रोत प्रदान करता है और यह पहचान बहुधा गलत बोध देता है कि अन्य धर्म प्रणालियों की तुलना में उनके अपने धर्म के मूल्य श्रेष्ठ हैं। इसलिए यदि हिन्दू धर्म संकेन्द्रण की विधा के रूप में मूर्ति पूजा और अहिन्सा को मूल्य के रूप में अपनाता है तो अन्य कुछ ऐसे हैं जो मूर्ति पूजा के विरोधी हैं कि वे पशुबलि पर आपत्ति नहीं करते हैं ताकि गोश्त उन अनुयायियों द्वारा भोजन के रूप में खा सकें।

इस विश्वास के साथ कि धर्म विशेष श्रेष्ठ हैं अधिकांश अनुयायी महसूस करते हैं कि उनका धर्म सार्वभौम बना चाहिए और कि इसे विश्व भर में सभी को अपनाना चाहिए। उनका धर्म श्रेष्ठ है, इस विश्वास की पुष्टि करने के लिए उस धर्म के अनुयायी अपने धर्म को न मानने वालों का सक्रिय रूप में धर्म परिवर्तन की कोशिश करते हैं और अन्य धर्मावलम्बियों का अपने धर्म बदलने के लिए संघर्ष में लगे रहते हैं। सामान्यतया यह "नास्तिकों और नास्तिकों" का दिल और दिमाग जीतने के लिए अनुनय द्वारा, मिशिनरी कार्यकलाप के माध्यम से किया जाता है। परन्तु कभी कभी लब्धप्रतिष्ठ धर्म की छवि बिगाड़ने के लिए रिश्वत से या तलवार से धर्म परिवर्तन किया जाता है। बलपूर्वक धर्म परिवर्तन से बहुधा भिडंत होती है, यहाँ तक कि हिन्सा भी होती है, यह धार्मिक विश्वासों के मूलभूत सिद्धान्तों के विरुद्ध है।

यह उल्लेख करना महत्वपूर्ण है कि धर्मों के अपने सिद्धान्तों के उच्च आदर्श होते हैं, फिर भी उन धर्मों में कुछ लोगों के कार्यकलाप बहुधा उच्च आदर्शों के विपरीत होते हैं। धार्मिक सिद्धान्तों को कभी कभी "अति उत्साहियों" या कट्टरपंथियों द्वारा दुरुपयोग किया जाता है। परन्तु हमेशा सभी धर्मों का दुरुपयोग नहीं किया जाता है। उदाहरण के लिए, केग्ली जूनियर और विट कॉफ ने लिखा कि "भिन्न भिन्न धर्मों की सहिष्णुता की हिन्दू विचारधारा पर विचार करें, जो सिखाता है कि सत्य के कई मार्ग हैं और विविध जनसमुदायों में अनेकवाद (द्वैतवाद) स्वीकार करता है। इसी प्रकार बौद्ध धर्म शांतिवाद का उपदेश देता है, जैसा कि प्रारंभ में ईसाई धर्म ने किया, जिसमें ईसाइयों को रोमन साम्राज्य की सेनाओं में सेवा करना निषिद्ध किया था।" कभी कभी उन्माद पैदा हो सकता है जो उग्र विद्वेषपूर्ण धार्मिक आन्दोलनों का रूप लेता है। ये आन्दोलन धर्म को बदनामी लाते हैं। समस्याएँ तब उत्पन्न होती है जब राजनीति में धर्म रुचि लेता है।

उग्रवादी धार्मिक आन्दोलन की कुछ विशेषताएँ होती हैं। ये हैं: (i) ऐसे आन्दोलन की प्रवृति विद्यमान सरकार को भ्रष्ट और गैर कानूनी देखने की होती है क्योंकि यह धर्मनिरपेक्ष है; (ii) वे समाज में घरेलू बुराइयों की निन्दा करते हैं और सरकार के स्थान पर अपने आपको स्थापित करने का प्रयास करते

हैं; (iii) वे सरकार की सभी नीतियों और कार्यकलापों को धर्म पर विश्वास करने वालों के हाथ में लाने की कोशिश करते हैं; (iv) वे अपने आपको सार्वदेशिक समझते हैं, जिसका अभिप्राय है, उग्र धार्मिक आन्दोलन अपने धर्म के प्रचार के लिए अन्तर्राष्ट्रीय सीमाएँ नहीं मानते हैं; (v) वे बहिष्कारवादी हैं और उस धर्म को न मानने वाले सभी के साथ दूसरी श्रेणी के नागरिक का व्यवहार किया जाता है, और (vi) वे उग्रवादी होने के कारण, अपने उद्देश्यों के लिए बल प्रयोग करते हैं।

कभी-कभी धार्मिक आन्दोलन कठोर रुख अपनाने के लिए विवश हो सकते हैं। उदाहरण के लिए, जैसा कि प्रोफेसर मुशिरूल हसन ने (*हिन्दू*, 29 जनवरी 2003) लिखा, "मुस्लिम राज्येत्तर का परा-राष्ट्रीय आयाम है, जैसा कि इजराइयल द्वारा फिलीस्तीन के गैर कानूनी कब्जे की प्रतिक्रिया से देखा जा सकता है...." एक बाद यदि इस तथाकथित अन्याय को ठीक किया जाता है तो यह आशा की जा सकती है कि धार्मिक परा-राष्ट्रीय आन्दोलन उग्रता को त्याग देंगे।

32.4.1 दावत-इ-इस्लामी

जब नवीनतम धार्मिक आन्दोलन, दावत-इ-इस्लामी की स्थापना 1981 में किया गया था और यह विश्व भर में मुस्लिम भाई चारे को बढ़ावा देने का प्रयास करता है। दावत-इ-इस्लामी का अर्थ है, इस्लाम को नियंत्रण, इसे मौलाना मुहम्मद कादिरी द्वारा आरंभ किया गया था। पाकिस्तान में स्थापित, सुन्नियों द्वारा प्रचारित दावत सुन्नाह, पैगम्बरी रास्ते का अनुकरण करने के लिए ईमान रखने वाले को आमंत्रित करता है। इसका उद्देश्य पैगम्बर और मदीना में प्राचीन समुदाय के लिए प्यार को बढ़ावा देना और गहरा करता है। "दावत-इ-इस्लामी : एन एस्पाइरिंग ट्रान्सनेशनल मूवमेण्ट" लेख में मुर्जीब अहमद, पाकिस्तानी प्रवक्ता ने लिखा "आन्दोलन उपदेश द्वारा इस्लाम का नवजागरण और पुनरुत्थान का प्रतीक है। इसकी मुख्य विशेषता यह उपदेश देना है कि क्या सही है और क्या वर्जित है।" दावत-इ-इस्लामी के सदस्य सुन्नाह का पालन करने के लिए सदा उत्सुक रहते हैं, सदा सफेद वस्त्र, नीली पगड़ी पहनते हैं और सदा अपने जेबों में मिसवाक (दंत ब्रुश के बदले प्रयुक्त लकड़ी की डंडी) रखते हैं। आन्दोलन सम्पूर्ण विश्व में मुसलमानों के बीच सार्वदेशिक भाई चारे को बढ़ाकर देते हैं। इस दृष्टि में यह प्रेरणादायक परा-राष्ट्रीय आन्दोलन है। दावत के प्रत्येक सदस्य के लिए मौलाना कादिरी का मुरीद (शिष्य) होना आवश्यक है। परन्तु इसके आलोचक हरी पगड़ी पहनने पर अधिक प्रसन्न नहीं है उनके विचार से इन पर अधिक बल दिया जाता है।

32.4.2 विभिन्न प्रकार के अन्तर्राष्ट्रीय कार्यकलाप

कई विशेषज्ञों का विश्वास है कि उग्रवादी धार्मिक आन्दोलन पाँच प्रकार के अन्तर्राष्ट्रीय कार्यकलापों की अपेक्षा करते हैं। पहला है, *अमुक्त संयोजनवाद* (*irredentism*), जिसका अभिप्राय है, प्रमुख धर्म या संजातीय समूह द्वारा उस राज्य क्षेत्र के पुनः दावा करना जिसपर पहले कभी उनका कब्जा था, परन्तु बाद में किसी अन्य धर्म या समूह ने उस पर कब्जा कर लिया था। दूसरा, पृथकतावादी, या अलगाववादी विद्रोह धार्मिक या संजातीय अल्पसंख्यकों द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय रूप से मान्यता प्राप्त राज्य से अलग होने का प्रयास करते हैं। यहाँ भी बल का प्रयोग हो सकता है। जब ये विद्रोह सफल होते हैं, तो राज्य दो या अधिक राजनीतिक इकाइयों में विभाजित हो जाता है - जैसा कि तय हुआ जब ब्रिटिश भारत को विभाजित कर पाकिस्तान बनाया गया था, जहाँ रूस से पृथक होने के लिए प्रयास चल रहे हैं। तीसरे, क्रियाकलाप में उग्रवादी धर्म का प्रयास आप्रवासन करना होता है, जिसका अभिप्राय है, उत्पीड़न से बचने के लिए धार्मिक अल्पसंख्यकों का प्रस्थान, जब यहूदियों को जर्मनी और आस्ट्रिया

से बच भागने के लिए बाध्य किया गया था। यह नाज़ियों द्वारा उत्पीड़न का परिणाम था। वहाँ अल्पसंख्यक उग्रवादी नहीं थे। चौथा क्रियाकलाप - (यद्यपि उग्रवाद का परिणाम नहीं था) ऐसे समुदायों या प्रवासी उत्पन्न हो सकते हैं जो विदेश में आतिथेय देशों में निवास करते हैं परन्तु भावनात्मक, आर्थिक और यहाँ तक कि राज्येत्तर संबंध भी अपने मूल निवास की भूमि से बनाए रखते हैं (प्रवासी पर नीचे पृथक अनुभाग देखें) अंत में, उग्रवाद से *आतंकवाद* उत्पन्न होता है।

32.5 परा-राष्ट्रीय समुदाय और सभ्यता मूलक आन्दोलन

विश्व के भिन्न भिन्न भागों में संजातीय राष्ट्रीय आन्दोलन हो रहे हैं। यद्यपि राज्य विश्व के मामलों में निश्चित रूप से सबसे अधिक शक्तिशाली रहता है, परन्तु राष्ट्रीयता वह प्रबल सांस्कृतिक कारक हैं जो राज्य की निष्पादन कार्य प्रणाली को प्रभावित करता है। बहुत लोग राज्य के प्रति उतना अधिक निष्पादन नहीं होते हैं जितना कि अपने संजातीय राष्ट्रीय समूहों के लिए होते हैं। इन समूहों के सदस्य समान सभ्यता, भाषा, सांस्कृतिक परम्परा और सगोत्रता के होते हैं। ई.के.फ्रांसिस के अनुसार "सांस्कृतिक साम्य सहभाजित भाषा, वंश या अन्य संकेतों से प्रकट होता है - इस प्रकार एक समुदाय का दूसरे से स्वतः अंतर किया जा सकता है।" संजातीय समूहों को महत्व देने से राज्य की प्रासंगिकता कम होती है। अधिकांश राज्य बहुराष्ट्रीय हैं। 1994 में विश्व के लगभग 190 राष्ट्र-राज्यों में से 120 देशों में राजनीतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण अल्पसंख्यक थे। इसलिए समकालीन अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों को समझने के लिए संजातीय समूह महत्वपूर्ण हैं।

कारेन फॉग ऑल्विंग ने तर्क दिया था कि "आप्रवासियों की उनके मूल राष्ट्र-राज्य के स्थानों की सामाजिक सांस्कृतिक संरचना को कम करना संभव नहीं है। उनके स्थानांतरण/पारगमन के आधार पर और उन स्थानान्तरणों के सामाजिक, आर्थिक और राज्येत्तर संदर्भ में परा-राष्ट्रीय आप्रवासियों की पहचान उनके परिवार के नेटवर्कों से परिवार के घर से की जाती है, मूल के देश के साथ कार्यकलापों में सम्मिलित होकर अपनत्व की अपनी भावनाएँ व्यक्त करना आवश्यक नहीं है।" वह परा-राष्ट्रीय सामाजिक सांस्कृतिक आयामों की व्यापकता को औपचारिक रूप से और अनौपचारिक रूप से संगठित संजातीय संस्थाओं में सीमित करने का विरोध करती हैं। वह लोगों के दृष्टिकोण से ऐसे परा-राष्ट्र पर विचार करने और एक ढाँचा विकसित करने का आग्रह करती हैं जो इस प्रक्रिया का व्यक्तिगत आयाम ग्रहण करेगा। भिन्न भिन्न संस्कृति और सभ्यता की पृष्ठभूमि के लोगों के आप्रवासन परा-राष्ट्रीयता उत्पन्न करता है, क्योंकि वे उस देश की संस्कृति के साथ अपने मूल के देशों की संस्कृति को जोड़ते हैं, जिस देश को वे अपनाने और बसने के लिए चुनते हैं।

संजातीय राष्ट्रीय आन्दोलनों की एक विशेषता बहुत स्पष्ट है। उनमें से अधिकांश राज्यों की वर्तमान सीमाओं को पार कर आए हैं, क्योंकि इनमें से अधिकांश समूहों की मौजूदगी दो या अधिक देशों में हैं, जैसे उदाहरण के लिए, भारत के तमिल, श्रीलंका और सिंगापुर में संजातीय समूह के रूप में बाहर आए हैं। यहूदी केवल इजराइल में सीमित नहीं है। वे संयुक्त राज्य अमेरिका सहित कई देशों में महत्वपूर्ण शक्ति बने हुए हैं। परा-राष्ट्रीय संस्कृति और सभ्यताएँ अन्तर्राष्ट्रीय सीमाओं को नहीं मानती हैं। एक दृष्टिकोण यह है कि विभिन्न सभ्यताओं या संजातीय संस्कृतियों के बीच हिन्सक संघर्षों द्वारा भविष्य अंधकारपूर्ण होगा। इस प्रकार के प्रत्येक संघर्ष उसी प्रकार विध्नकारी होंगे, जैसे शीत युद्ध के पूर्व-पश्चिम के वैचारिक संघर्ष थे हण्टिगटन (1993) के अनुसार भावी अन्तर्राष्ट्रीय संघर्ष "मुख्यतया वैचारिक या आर्थिक नहीं होगा।" बल्कि "राष्ट्रों और भिन्न-भिन्न सभ्यताओं के समूहों के बीच होगा।" सैमुअल हण्टिगटन जिसने "सभ्यताओं का संघर्ष" प्रतिपादित किया, उसके अनुसार सात या आठ

प्रमुख सभ्यताएँ हैं। इनमें पश्चिमी, कन्फ्यूशियन, जापानी, इस्लामिक, हिन्दू, स्लाविक-आर्थोडाक्स, लेटिन अमेरिकी और संभवतः अफ्रीकी हैं।

वर्तमान अन्तर्राष्ट्रीय प्रणाली को एक खास सभ्यता, अर्थात् यूरोप में केन्द्रित पश्चिमी सभ्यता की उपज कहा जाता है। उत्तरी अमेरिका की संस्कृति अधिकांशतः यूरोपीय सभ्यता से प्रभावित थी। चीनी और भारतीय सभ्यता काफी अधिक प्राचीन है परन्तु उन्हें पश्चिमी साम्राज्यवादियों के हाथ हानि उठानी पड़ी। मिश्र की सभ्यता एक अन्य प्राचीन संस्कृति है। समकालीन विश्व में सभ्यता संबधी आन्दोलनों को मुख्यतया विश्व के एक भाग से दूसरे भाग में आप्रवासियों द्वारा प्रभावित किया गया है फिर भी, सभ्यता संबंधी आन्दोलनों ने राष्ट्र-राज्य के लिए कोई वास्तविक संकट खड़ा नहीं किया है।

32.5.1 प्रवासी (Diasporas)

शब्द प्रवासी (Diasporas) हाल ही के दिनों में पर्याप्त प्रचलित हुआ है। विश्व में द्रुतगामी यात्रा के जेट युग के परिणामस्वरूप भारी संख्या में आप्रवासन हुआ है, यह मुख्यतया (परन्तु आवश्यक रूप से नहीं) तृतीय विश्व के देशों से पश्चिमी औद्योगिक राष्ट्रों में हुआ है। प्रवासी की परिभाषा करते हुए केग्ली जूनियर और विटकॉफ कहते हैं, "आप्रवासी डाइस्पोरा (प्रवासी) या समुदाय उत्पन्न करते हैं जो विदेशों में आतिथेय देशों में रहते हैं परन्तु अपने मूल भूमि के साथ भावात्मक, आर्थिक और राजनीतिक संबंध बनाए रखते हैं।" शब्द प्रवासी में वे लोग शामिल हैं, जिनका मूल एक देश में हैं परन्तु निवास दूसरे देश में करते हैं जबकि कुछ प्रकार का संबंध अपने मूल देश से बनाए रखते हैं। वे आतिथेय देशों में भी अपनी सभ्यता को जीवित रखते हैं। यह शब्द तीसरी या चौथी पीढ़ियों पर लागू नहीं की किया जा सकता है परन्तु निश्चित रूप से उनके लिए प्रयुक्त हो सकता है जो तब भी अपनी सभ्यता और सांस्कृतिक मूल्यों से जुड़े हुए हैं, और पृथक समूह बनते हैं।

लगभग दो शताब्दियों से लोग भारत से विदेश जा रहे थे। बीसवीं शताब्दी के मध्य तक उनमें से बहुत कम अपनी इच्छा से नौकरी के लिए गए थे। उनमें से अधिकांश को साम्राज्यवादी मालिकों द्वारा बागानों में मज़दूरों के रूप में श्रीलंका, फिजी, मारिशस, मालदीव आदि, जैसे स्थानों में ले जाया गया। कुछ अन्य ब्रिटिश उपनिवेशों, जैसे कोनिया, दक्षिण अफ्रीका या नाइजीरिया में व्यापार करने के लिए गए। परन्तु विकसित देशों में अधिक अवसरों की उपलब्धता और वायु यात्रा के द्रुतगामी साधनों से बहुत बड़ी संख्या में लोग भारत से बाहर यूनाइटेड किंगडम, कनाडा, संयुक्त राज्य अमेरिका और जर्मनी जाने लगे। अन्य देशों में भी बहुत कम संख्या में लोग गये। 1970 के दशक से आप्रवासन भयानक मात्रा में बढ़ गया। इसके फलस्वरूप, स्वदेश में प्रतिभा पलायन की स्थिति उत्पन्न हो गई और आतिथेय देशों में कुछ मामलों में दबाव और तनावपूर्ण सम्बंध भी उत्पन्न हुए।

संयुक्त राज्य अमेरिका को स्वयं आप्रवासियों के देश के रूप में जाना जाता है। ब्रिटिश से आरम्भ करते हुए जिसने सत्तरहवीं और अठारहवीं शताब्दियों में 13 उपनिवेश स्थापित किए, बहुत से अन्य यूरोपियों ने भी संयुक्त राज्य अमेरिका में बस गए। शब्द प्रवासी उनके लिए प्रयोग नहीं किया गया है, जो शताब्दियों पहले परदेश जाकर बस गए थे। परन्तु उनके लिए जो पहली या दूसरी पीढ़ी के आप्रवासी हैं, प्रयोग किया गया हैं। इस पर भी न केवल इंडियन अमेरिकन सुना जा सकता है बल्कि पोलिश-अमेरिकन या स्पेनिश अमेरिकन आदि सुन सकते हैं।

प्रायः बहुत बड़ी संख्या में आप्रवासी अपने आपको पृथक समूह के रूप में संगठित करते हैं और आतिथेय देशों में दबाव समूहों के रूप में कार्य करते हैं। यहाँ तक कि जब वे आतिथेय देश की

नागरिकता प्राप्त करते हैं, वे अपनी जड़ों को, अपने मूल रीतिरिवाजों और परम्पराओं को विरले ही भूल पाते हैं। यह उन्हें सभ्यता संबंधी और सांस्कृतिक आन्दोलन के रूप में संगठित होने में सहायता करता है। भारत में जनवरी 2003 में आयोजित सबसे पहला प्रवासी भारतीय दिवस लगभग 100 देशों से भारतीय मूल के लोगों का यह अनूठा संगम था। प्रवासी दो श्रेणियों में आते हैं - पहले वे जो स्थायी रूप से आतिथेय देशों में बस गए हैं और उसके राष्ट्रिक बन गए हैं, भारतीय मूल के लोग (People of Indian Origin – PIO) के रूप में जाने जाते हैं; और अन्य हैं, वे अनिवासी भारतीय (Non-resident Indians – NRI) कहलाते हैं। मिलकर वे भारतीय प्रवासी कहलाते हैं। अन्य देशों के भी ऐसे ही प्रवासी हैं।

इसे अच्छी तरह से समझने के लिए, आइए, हम परा-राष्ट्रीय आन्दोलन के आधार के रूप में भारतीय प्रवासियों का अध्ययन करें। भारतीय प्रवासी लगभग 2 करोड़ हैं और 110 देशों में फैले हुए हैं। उनमे से अधिकांश अंग्रेजी-भाषी देशों में हैं। गल्फ क्षेत्र (खाड़ी देशों) में भी बहुत बड़ी संख्या में भारतीय मूल के लोग और अनिवासी भारतीय हैं। कुछ अन्य आँकड़ों पर विचार करने के लिए, 2003 में यूनाइटेड किंगडम में भारतीय प्रवासी 12 लाख थे, संयुक्त राज्य अमेरिका में 16,78,765 लोग, कनाड़ा में 8,51,000 और नीदरलैण्ड में 2,17,000 थे। गल्फ और पश्चिम एशिया, सउदी अरब में 15 लाख, कुवैत में 2,95,000, यू.ए.ई. में 9,50,000 और कतार में 1,31,000 भारतीय हैं। अन्य स्थानों में ऑस्ट्रेलिया में 1,90,000 भारतीयों का नया घर है, दक्षिण अफ्रीका में 10 लाख, मलेशिया में 16,65,000, सिंगापुर में 3,07,000, केन्या में एक लाख से अधिक, मॉरीशस में 7,15,756 और फिजी में 3,36,829 भारतीय है। सम्पूर्ण विश्व में बहुत फैले हुए हैं।

कुछ प्रमुख बिन्दु जिन पर विशेष उल्लेख करना आवश्यक है:

1) जबकि बहुत युवकों ने आतिथेय देशों में जन्म लिया और वहीं उनका पालन पोषण तथा शिक्षा दीक्षा हुई, वे वहीं की स्थानीय संस्कृति में घुल मिल गए, अधिकांश पहली और दूसरी पीढ़ी के आप्रवासी, अपने मूल के देश (उदाहरणार्थ भारत) ये अपने सम्बंध बनाए रखते हैं। सोवियत संघ, कनाडा और ऑस्ट्रेलिया जैसे देशों में अधिकांश भारतीयों अपने धार्मिक विश्वासों, भोजन की आदतें और परम्पराएँ बनाए रखते हैं।

2) प्रवासियों के अधिकांश सदस्य अभी भी भारत में विवाह करने और अपने साथ भारतीय संस्कृति ले जाने को वरीयता देते हैं।

3) यूनाइटेड किंगडम और संयुक्त राज्य अमेरिका जैसे देशों में, चाहे वे व्यवसाय, जैसे चिकित्सा, वास्तुकला में हों या सूचना प्रौद्योगिकी या व्यापार में हो, अपने नए अपनाए गए देशों की राजनीति में बहुत योगदान करते हैं। उनमें से अधिकांश एक पार्टी या अन्य के चुमाव के लिए धन एकत्र करते हैं तथा योगदान करते हैं। यूनाइटेड किंगडम में स्वराजपाल, उद्योगपति को पियर हाउस ऑफ लॉडर्स का सदस्य बनाया गया। कम से कम दो अन्य पियर्स है और लगभग भारतीय मूल के आधे दर्जन व्यक्ति हाउस ऑफ कॉमन्स के सदस्य निर्वाचित हुए हैं। यूनाइटेड किंगडम में एक भारतीय मंत्री, कनाडा में ब्रिटिश कोलाम्बिया का प्रधानमंत्री, फिजी का प्रधानमंत्री (महेन्द्र सिंह चौधरी) रहे हैं, संयुक्त राज्य अमेरिका के राज्यों में से एक में भारतीय सेनेटर है, और मॉरिशस के नेतृत्व की जड़े भारत में हैं।

4) पूजा के भारतीय स्थान, मंदिर, गुरुद्वारे और मस्जिदें स्थापित किए गए हैं और वहाँ विद्यमान प्रवासी उन्हें श्रद्धा और सम्मान के साथ बनाए रखते हैं।

5) भारतीय प्रवासियों ने विदेशी भूमि पर भारतीय व्यंजनों को लोकप्रिय बनाया है। लंदन, न्यूयार्क, न्यू जर्सी, एडस्टर्डम, यहाँ तक कि पेरिस में भी कई भारतीय रेस्टोरेण्ट हैं। ब्रिटिश लोग भारतीय कढ़ी और सीख पर भूने गोश्त के बहुत शौकीन हो गए हैं।

6) इस प्रकार प्रवासियों द्वारा सांस्कृतिक और सभ्यतामूलक आन्दोलन चलाए जाते हैं। यह मूल भूमि और आतिथेय देश के बीच प्रमुख कड़ी के रूप में कार्य करता है। 2003 में नई दिल्ली में भारतीय मूल के लोग (PIO) और भारतीय अनिवासी (NRI) के सर्वप्रथम आयोजित सम्मेलन में प्रधानमंत्री, वाजपेयी ने कहा था "सफलता का निर्देश चिह्न, (बैंचमार्क) जिसे प्रवासी समुदाय ने स्थापित किया है, भारत में हमारे लिए चुनौती हैं। वे हमें यह विश्लेषण करने के लिए बाध्य करते हैं कि भारत नव परिवर्तन उत्पादनकारी और सफल स्वयं अपने देश की तुलना में बाहर इतना अधिक सफल क्यों हैं ....।" आगे उन्होंने कहा कि "हमें आपका धन समृद्धि नहीं चाहिए, हम आपके अनुभव की समृद्धि चाहते हैं।" इसे ध्यान में रखते हुए भारत एक महत्वपूर्ण आधार है, विदेश मंत्री, यशवंत सिन्हा ने अपील की "भारतीय प्रवासी में सभी समुदाय के नेताओं से एक ही छत के नीचे अपने आपको अधिक से अधिक संगठित होने का प्रयास करे, ताकि आपकी सामूहिक स्वर प्रभावकारी ढंग से सुनी जा सके।" "परा-राष्ट्रीय को नया अर्थ देते हुए, फिजी के मंत्री शिव राज ने सभी संस्कृतियों के गुण ग्रहण का आह्वान किया, क्योंकि केवल एक ही प्रजाति है जो मानव प्रजाति है ... यदि आप कसि एक प्रजाति का सम्मान नहीं करते हैं तो समस्या उत्पन्न होगी।" जिम्बावे के न्यायाधीश अहमद इब्राहीम ने फिजी के नेता का समर्थन किया और कहा "एक दूसरे को देखे, आप देखेंगे कि हम एक जैसे लोग हैं।"

यही वह भावना है जो परा-राष्ट्रीय आन्दोलन की सफलता के पीछे हैं।

32.6 संस्कृति और परा-राष्ट्रीय आन्दोलन

दूर संचार के अधिक नए माध्यमों के युग में, संस्कृतियों और सापेक्ष महत्व में बहुत विभाजन के होते हुए भी नए विश्वव्यापी संस्कृति उभर रही है। गोल्डस्टीन का मत है कि "भूमंडलीय ग्राम में दूरी और सीमाओं का कम महत्व हैं। दर्जनों देशों के आर पार लोगों को एक जैसा समाचार, एक जैसा संगीत और वैसे ही खेल समारोह होते हैं। इस विकास से परा-राष्ट्रीय समाकलन सृजन होने की संभावना है जिसके फलस्वरूप विश्वव्यापी पहचान सहित अति राष्ट्रीय (सुपर नेशनल) पहचानों का आविर्भाव हो सकता है। यदि यूरोपीय संघ के देशों के नागरिक "यूरोपियन" के रूप में सोचना शुरु कर सकते हैं तो परा-राष्ट्रीयवाद संयुक्त राष्ट्र सदस्य देशों के लोगों को पृथ्वी ग्रह के मानव और निवासी के रूप में सोचने के लिए विवश कर सकता है।

तथापि इसका नकारात्मक पक्ष भी है। विश्वव्यापी संस्कृति केवल वर्तमान महाशक्ति संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा प्रभावित "सांस्कृतिक साम्राज्यवाद" में बदल सकती है। संयुक्त राज्य अमेरिका की संस्कृति का प्रभाव उतना ही सुदृढ़ है जितना उसका सैन्य प्रभाव है। अंग्रेजी तेजी से विश्व की भाषा बन रही है और संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रपति विश्व की राजनीति को तथा संस्कृति को भी प्रभावित करने का प्रयास कर सकते हैं। संयुक्त राज्य अमेरिका की फिल्मों और टेलीविजन कार्यक्रमों का पहले से ही विश्व बाजार पर प्रभुत्व है। सी एन एन न्यूज चैनल विश्व भर के लाखों दर्शकों की सोच-विचार को अपने अनुकूल बनाने का प्रयास करता है।

"मैक वर्ल्ड" की अवधारणा परा-राष्ट्रीय भोजन आन्दोलन का उदाहरण है। आज मैक डोनाल्ड के बिक्री केन्द्र अपने बर्गरों की बिक्री करते हुए विश्व के सभी प्रमुख शहरों में पाए जाते हैं, इस प्रकार वह अन्य के अलावा भारतीय और चीनी आदतों को धीरे-धीरे, बदल रहा है। चीनी नूडल और तले हुए चावल जंक भोजन के रूप में पृष्ठभूमि में चले गए हैं। इसी प्रकार भारतीय पुरियाँ, कढ़ियाँ और डोसा पर शीघ्र ही बर्गर और पिज्जा का प्रभुत्व हो सकता है। "मैक आक्रमण" द्वारा प्रतिबिम्बित भूमंडलीय संस्कृति ने भूमंडलीयकरण की लहर खोली है। जब चीन के बंद (क्लोज) समाज को सांस्कृतिक साम्राज्यवाद के लिए खोला गया चीनी नेता कई वर्षों तक इस बारे में अनिश्चित थे, क्या मैक डोनाल्ड पश्चिमी शैली की समृद्धि या आध्यात्मिक प्रदूषण लाया है कि नहीं। संभवतः समृद्धि और आध्यात्मिक प्रदूषण दोनों थे, परन्तु थोड़े-थोड़े।

हम, संक्षेप में, कई क्षेत्रों का उल्लेख कर सकते हैं जो सांस्कृतिक परा-राष्ट्रीय आन्दोलनों में सहायता कर रहा है।

32.6.1 अन्तर्राष्ट्रीय पत्रकारिता

जोशुआ एस. गोल्डस्टीन ने 1990 के दशक के उत्तरार्ध में राय व्यक्त की थी कि यद्यपि "विश्वव्यापी संस्कृति अभी केवल नवजात स्थिति में हैं, और सबसे अधिक शक्तिशाली पहचान अभी राष्ट्रीय स्तर पर है, लोगों ने उन विशिष्ट समुदायों में भाग लेना आरंभ कर दिया है जो राष्ट्रीय सीमाओं को जोड़ते हैं।" उदाहरण के लिए, अन्तर्राष्ट्रीय पत्रकार ऐसे समुदायों के सदस्य हैं। पत्रकार विभिन्न देशों से आए हुए सहयोगी पत्रकारों के साथ काम करते हैं और एक देश से दूसरे में साथ-साथ यात्रा करते हैं और परा-राष्ट्रीय भाईचारा बनाते हैं। एक साथ वे समाचार एकत्र करते हैं और विचार व्यक्त करते हैं। "यद्यपि पत्रकार के रूप में पत्रकार की पहचान को विरले ही उसकी राष्ट्रीय पहचान की तुलना में वरीयता दी जाती है, पत्रकारों की परा-राष्ट्रीय समुदाय का अस्तित्व अन्तर्राष्ट्रीय अन्योन्याश्रय के नए रूप में उत्पन्न करता है।" पत्रकारों की भांति भिन्न भिन्न देशों के वैज्ञानिक भी प्रायः राष्ट्रीय सीमाओं के आर-पार फैले हुए समुदायों में साथ-साथ काम करते हैं। उदाहरण के लिए, जब पाकिस्तानी वैज्ञानिक और प्रौद्योगिकीविद् परमाणु अस्त्र विकसित करने के लिए अपने चीनी प्रतिपक्षी के साथ काम करते थे तो जब वे काम कर रहे थे तो पाकिस्तानी या चीनी के रूप में नहीं। इसी प्रकार यदि भारतीय उपग्रह एक देश या अन्य की सहायता से छोड़ा जाता है तो वैज्ञानिकों के नए समुदाय का आविर्भाव होता है। जब स्वर्गीय कल्पना चावला ने अंतरिक्ष अनुसंधान केन्द्र को अपनाया तो वह भारतीय या भारतीय अमेरिकी की तुलना में अंतरिक्ष वैज्ञानिकों के समुदाय की सदस्या थी।

32.6.2 अन्तर्राष्ट्रीय खेलकूद समारोह

अन्तर्राष्ट्रीय खेल प्रतिस्पर्धाएँ सबसे अधिक व्यापक आधार के अन्तर्राष्ट्रीय समुदायों में एक है। उदाहरण के लिए, लाखों क्रिकेट शौकीन टेस्ट या एक दिवसीय मैच देखते हैं। प्रत्येक चार वर्षों में आयोजित ओलम्पिक खेलों और नियमित फुटबाल मैंचों के लिए यह सत्य है। यह भी सत्य है कि जब भी भारत से पाकिस्तानी टीम पराजित हो जाती है। प्रायः ये प्रतिस्पर्धाएँ उत्साहियों के बीच द्वेष उत्पन्न हो जाता है और न केवल खेल के मैदान में गुण्डागर्दी होती है, बल्कि उत्साही अपने टी वी सेट भी तोड़ डालते हैं। या ब्रिटिश फुटबाल खेल "अपनी टीम पराजित होने में अन्य यूरोपीय देश में गुण्डागर्दी हो जाती है।" ये घटनाएँ राष्ट्रीयता की चरम अवस्था दिखाते हैं, जैसे जीतने वाली क्रिकेट टीम के समर्थक अपने झंडों को लहराते हुए गाते हैं और नाचते हैं। इसके अतिरिक्त खेल का समर्थन परा-राष्ट्रीय भाईचारा उत्पन्न करता है।

परन्तु कुल मिलाकर, खेल प्रतिस्पर्धाओं का सकारात्मक प्रभाव होता है। इस संबंध में गोल्डस्टीन स्थिति का सार कैसे प्रस्तुत करता है: "कुछ लोग खेल को शान्ति की शक्ति के रूप में देखते हैं। खेल भिन्न-भिन्न देशों से सहभाजित कार्यकलापों में एक साथ करते हैं। भिन्न भिन्न राज्यों के नागरिक उन खिलाड़ियों क प्रशंसा में शामिल होते हैं, जो अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति अर्जित करते हैं।" इजराइल में यहूदी और अरब बच्चों में बीच की खाई को पाटने के लिए सबसे अधिक सफल कार्यक्रमों में एक फुटबाल शिविर है, इसमें दोनों समुदायों से श्रेष्ठ खिलाड़ी एक साथ कोचों के रूप में भाग लेते हैं। एक रोचक घटना में जब चीनी-अमेरिकी 1971 का पुनर्मेल इतना नाजुक था कि तब तक राजनीतिक सहयोग संभवनहीं था जब तक संयुक्त राज्य अमेरिका टेबल टेनिस टीम द्वारा पहले मार्ग प्रशस्त न किया जाए, इसलिए उसने चीन का पहला संयुक्त राज्य अमेरिका दौरा किया। खेल वास्तव में जोड़ने वाली परा-राष्ट्रीय शक्ति है।

32.6.3 प्रसारण - टी.वी. और रेडियो की भूमिका

इलैक्ट्रानिक मीडिया परा-राष्ट्रीय सांस्कृतिक आन्दोलन में बहुत बड़ा खिलाड़ी है। यह न केवल प्रमुख नेटवर्कों जैसे सी एन एन, बी बी सी और स्टार पर समाचार वाचन है जो विश्व मत बनाता है बल्कि टी.वी. पर दिखाई गई फिल्में, सोप ओपेरा, सिटकॉम, चैट-शो भी पश्चिमी संस्कृति का प्रचार करने के लिए विशेषकर तृतीय विश्व के देशों में साथ-साथ चलते हैं। अपनी भूमिका में मीडिया भारत में अपने टी.वी. सीरियल, सिट कॉम, और भारतीय फिल्में दिखाने में लगा रहता है। उनमें से कुछ भारत के अपने मूल्यों पर आधारित होते हैं परन्तु बहुत पश्चिमी कृतियों का रूपांतर होते हैं। यह अन्तर्राष्ट्रीय मनोरंजन उत्पन्न करता है जिसका सकारात्मक और नकारात्मक दोनों प्रकार के प्रभाव होते हैं। तृतीय विश्व के कुछ बड़े देश जैसे ब्राजील और भारत जिनका टी.वी. कार्यक्रमों में स्थानीय संदर्भ होता है, अपने प्रवासियों को प्रभावित करते हैं और अपनी सांस्कृतिक और सभ्यता संबंधी मूल्यों को सुदृढ़ करते हैं। बहुत से टी वी कार्यक्रम का अपना अप्रत्यक्ष अभिप्राय होता है।

वाणिज्यिक (कामर्शियल) टी.वी. चैनलों के लिए विज्ञापन आय का महत्वपूर्ण स्रोत हैं। यह स्थानीय बाजारों को जीतने के लिए और आतिथेय देश के लोगों की आदतों को बदलने के लिए आक्रामक रूप से किया जाता है। कभी कभी, यह अति उत्साही विज्ञापन नकारात्मक और यहाँ तक कि हतोत्साही प्रभाव पैदा करते हैं। 1991 में एक ऐसी स्थिति दिखाई गई थी जब अल्बानिया साम्यवादी प्रणाली अपनी अर्थव्यवस्था से टूट रहा था। अल्बानिया निवासी, जो इटली के टीवी चैनलों को देख रहे थे और इटली की समृद्धि के अतिशयोक्तिपूर्ण दृश्य दिखाए जा रहे थे। इटली के टी वी पर एक कामर्शियल विज्ञापन में बिल्लियों को उनका भोजन चाँदी के बर्तनों में खिलाया जा रहा था। गरीब अल्बानियावासी उनकी समृद्धि पाने के लिए भरी नौका में इटली की ओर चल पड़े। परन्तु उन्हें इटली के प्राधिकारियों द्वारा वापस भेजा गया।

संयुक्त राज्य अमेरिका के नेतृत्व के गठबंधन द्वारा 1991 में इराक पर किया गया आक्रमण उदाहरण सहित यह दर्शाता है कि इलैक्ट्रानिक मीडिया ने सम्पूर्ण विश्व के दर्शकों को टी वी पर कैसे दिखा सकता है। न केवल बगदाद पर आक्रमण अमेरिकी चैनल सी एन एन द्वारा सीधे प्रसारित किए गए थे, जब बगदाद पर बमवारी शुरु की गई थी, राष्ट्रपति सद्दाम हुसैन अपने बंकर में बैठा हुआ सी एन एन पर खुला युद्ध देख रहा था। सी एन एन संकेत जिसे वह अपने टी वी सेट पर प्राप्त कर रहा था, बगदाद में वह समीपवर्ती होटल के कमरे से आरम्भ हो रहे थे, जमीनी फोन तारों से होकर जोर्डन जा रहे थे तब अटलांटा (संयुक्त राज्य अमेरिका) में सी एन एन मुख्यालय में गए, जहाँ यह उपग्रह से

होकर वापस टेलीकास्ट किए गए थे। इस प्रकार सद्दाम हुसैन ने बगदाद पर बमबारी के बारे में बगदाद में अपने बंकर में सूचना प्राप्त की और उसी समय संयुक्त राज्य अमेरिका के नेतृत्व सहित विश्व भर में लाखों दर्शक तक पहुँचा।

32.6.4 पर्यटन

परा-राष्ट्रीय कार्यकलाप में पर्यटन एक अन्य महत्वपूर्ण कारक है। अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटक राष्ट्रों की सीमाओं 50 करोड़ बार पार करते हैं। इसमें वे लोग भी शामिल हैं जो सरकारी कार्य पर, व्यापार के लिए या मित्रों और सम्बंधियों को मिलने जाते हैं, परन्तु उनमें से अधिकांश अपनी छुट्टियाँ बिताने जाते हैं। जो व्यक्ति अन्य देश की यात्रा पर जाते हैं, वे उस देश के लोगों का अधिक गहराई से समझने और मूल्यांकन की क्षमता विकसित करते हैं। व्यक्ति-व्यक्ति सम्पर्क मित्रता को बढ़ावा देता है और संघर्ष तथा युद्ध की संभावनाओं को कम करता है। उदाहरण के लिए, जो अमेरिकी नागरिक जापान की यात्रा करता है, इसकी संभावना अधिक है कि वह संयुक्त राज्य अमेरिका का जापानी व्यापार में पक्ष लेगा या जो भारतीय संयुक्त राज्य अमेरिका या यूनाइटेड किंगडम की यात्रा करते हैं, उन्हें ऐसा मैत्रीपूर्ण वातावरण मिलता है जिस पर घर बैठे विश्वास करना असंभव है। यहाँ तक कि जब पाकिस्तानी राष्ट्रिक भारत आते हैं, वे पूरी पूरी सद्भावना पाने पर हैरान होते हैं और न कि शत्रुता की जिसकी वे अपने मीडिया के मिथ्या प्रचार के कारण आशा करते हैं। परा-राष्ट्रीय समझ को आगे अधिक प्रोत्साहन मिलता है। जब छात्र दूसरे देश में पढ़ने जाते हैं। पर्यटकों के आने जाने से विश्व शान्ति को बढ़ावा मिलता है। केवल सरकार के नेताओं और अधिकारियों के दौरों से भिन्न भिन्न राष्ट्रों के बीच बेहतर समझदारी बढ़ती है। जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, यात्रा की तेज गति के साधनों और टेलीफोनों, ई-मेल आदि के माध्यम से आपसी संबंधों ने राष्ट्र-राज्य की सीमाओं को शिथिल कर दिया है और परा-राष्ट्रीय सांस्कृतिक सहयोग को बढ़ाया है, यद्यपि राष्ट्रीयता का अभी भी लोगों के जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है।

इन विभिन्न कार्यकलापों के माध्यम से धीरे-धीरे विकसित परा-राष्ट्रीय संबंध, जोशुआ गोल्डस्टीन के अनुसार "अन्तर्राष्ट्रीय अन्योन्याश्रय को बढ़ाता है जिससे एक राज्य के कल्याणकारी कार्य दूसरे राज्य के कल्याणकारी कार्यों से जुड़ते हैं। इससे शान्ति को बढ़ावा मिल सकता है क्योंकि जो व्यक्ति बाहरी देशों के बारे में अधिक जानता है, और जिसने उनकी संस्कृति के प्रति सहानुभूति विकसित की है, वह उस देश से राजनीतिक संघर्ष पर ब्रेक के रूप में कार्य कर सकता है और उसके साथ सकारात्मक सहयोग बढ़ाने का माध्यम बन सकता है।"

32.7 सारांश

परा-राष्ट्रीय आन्दोलनों ने अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों के स्वरूप को बदला है। लम्बे समय से राष्ट्र-राज्य केवल ऐसे अभिकर्त्ता रहे थे जिनके आपसी संबंध अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों के केन्द्र बिन्दु होते थे। हाल ही में, कई घटनाएँ हुई हैं जिन्होंने राष्ट्र-राज्यों की निरंकुश भूमिका से समझौता किया है। राज्य की एक दूसरे पर पारस्परिक निर्भरता, परिवहन के द्रुतगामी साधन, सूचना प्रौद्योगिकी में क्रान्ति और कई राज्येत्तर अभिकर्त्ताओं के आविर्भाव ने राज्यों की सीमाओं को शिथिल कर दिया है। व्यक्ति से व्यक्ति का संपर्क कई गुणा बढ़ गया है, इससे भिन्न भिन्न समुदायों और सभ्यताओं के बीच नियमित सम्पर्क संभव हुआ है।

यही वह पृष्ठभूमि है जिसमें परा-राष्ट्रीय आन्दोलन हो रहे हैं। परा-राष्ट्रीय आन्दोलन उस राजनीति पर आधारित हैं जिसमें परम्परागत राष्ट्र-राज्य और समस्त राज्येत्तर अभिकर्त्ताओं के बीच अन्योन्यक्रिया होती है, इन अभिकर्त्ताओं में धार्मिक संगठन, संजातीय समूह, बहुराष्ट्रीय निगम और अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवादी इकाइयाँ शामिल हैं। आज "सीमाएँ शिथिल हैं, और राज्य बाहरी दबाव तथा अपनी सीमाओं के अंदर ही लोगों की चुनौती दोनों के प्रति अति संवेदनशील है।"

सूचनाएँ तीव्र गति से फैलती हैं। इसका परा-राष्ट्रीय राजनीतिक प्रभाव होता है। धार्मिक आन्दोलन बहुधा आतंकवादी बन जाते हैं और वे राज्य को तथा अन्य धर्मों के लोगों को भी चुनौती देते हैं। अल-कायदा जैसे समूह हैं जो अपने धर्म के प्रचार के लिए वचनबद्ध हैं और जिन्होंने दूसरे धर्म के लोगों को और जिन्हें वे अपना शत्रु समझते हैं, को समाप्त करने के लिए आतंकवादियों ने हथियार उठा लिए हैं। आतंकवादी धार्मिक कार्यकलाप अमुक्त संयोजनवाद, या पृथकतावाद का रूप ग्रहण कर सकता है या उत्पीड़ित समुदायों के आप्रवासन को प्रोत्साहित कर सकता है या विदेशी भूमि पर प्रवासी कहे जाने वाले एक राष्ट्रीयता के लोगों को संगठित कर सकता है या अंततः यह आतंकवाद का रूप ग्रहण कर सकता है।

परा-राष्ट्रीय आन्दोलनों के पास इनपुट होते हैं, जैसे पत्रकारिता, खेल प्रतिस्पर्धा, इलैक्ट्रानिक मीडिया, और पर्यटन। विज्ञापन भी विभिन्न सांस्कृतिक समाजों को एक मंच पर ला सकता है। परा-राष्ट्रीय संबंध परस्पर निर्भरता को बढ़ाता है और सामान्यतया शान्ति को बढ़ावा देता है क्योंकि सांस्कृतिक और सभ्यतामूलक व्यक्तिशः सम्पर्क राज्येत्तर संघर्ष पर ब्रेक के रूप में और सकारात्मक सहयोग प्रेरक के रूप में कार्य करता है।

32.8 अभ्यास प्रश्न

1) आप परा-राष्ट्रीय आन्दोलन से क्या समझते हैं? राबर्ट केओहेन और जोजेफ नाई के अनुसार परा-राष्ट्रीय आन्दोलन की क्या अवधारणा है?

2) मीडिया ने अन्तर्राष्ट्रीय संस्कृति को कैसे प्रभावित किया है?

3) धार्मिक परा-राष्ट्रीय आन्दोलनों की विशेषताएँ संक्षेप में बताइए। भिन्न भिन्न प्रकार के आतंकवादी धार्मिक आन्दोलन क्या हैं?

4) स्पष्ट कीजिए, संजातीय राष्ट्रीय समूह क्या हैं?

5) परा-राष्ट्रीय आन्दोलन पर पश्चिमी सभ्यता का क्या प्रभाव है?

6) प्रवासी क्या हैं और यह परा-राष्ट्रीय आन्दोलनों को कैसे प्रोत्साहित करते हैं?

7) परा-राष्ट्रीय सांस्कृतिक आन्दोलनों में पत्रकारिता और पर्यटन के महत्व का विवरण दीजिए।